वर्ष-9 अंक-8, अगस्त 2018

पटना कलम

बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

सांस्कृतिक पर्यटन का प्रतीक-श्रावणी मेला

उत्तरायनी गंगा सुल्तानगंज को एक विशेष महत्व देती हैं। यहां गंगा नदी के बीच पत्थर की चट्टान पर अजगैबीनाथ महादेव की मंदिर स्थित है। उत्तरवाहिनी गंगा होने के कारण देश के विभिन्न भागों से यहाँ तक कि विदेशों से भी लाखों कि संख्या में कांवरिये श्रावण में यहाँ आते हैं और कांवर में गंगाजल भरकर बाबा बै।नाथ को जल चढ़ाने के लिए पैदल ही झारखंड स्थित देवघर को चल पड़ते हैं। सुल्तानगंज से कांवर लेकर चलते कांवरियों की संख्या करोड़ के आस-पास पहुँच जाती है। प्रत्येक वर्ष श्रावण के पावन महीने में लगने वाले विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला अवधि में सुल्तानगंज की महिमामयी उत्तर-वाहिनी गंगा तट पर स्थित अजगैबीनाथ धाम से लेकर देवघर के द्वादश ज्योतिर्लिंग बाबा बै।नाथ धाम के करीब 110 कि.मी. के विस्तार में मानों शिव का विराट लोक मंगलकारी स्वरूप साकार हो उठता है और समस्त वातावरण कांवरियां शिव भक्तों के जयकारे से गूंजायमान रहता है।

ऐसी मान्यता है कि जब भागीरथ के प्रयास से गंगा का स्वर्ग लोक से पृथ्वी पर अवतरण हुआ था तो उस समय उनका वेग बहुत ही तेज था। भागीरथ के रथ के पीछे-पीछे बहती हुई जब गंगा सुल्तानगंज पहुंची तो एक पहाडी पर स्थित जह्नु मुनि की आश्रम को बहाकर ले जाने के लिए अड़ गयी। इससे जह्नु मुनि बहुत क्रोधित हो गए और अपनी तपो बल से गंगा को अपनी चुल्लू में उठाकर पी गए। फिर भागीरथ के बहुत आग्रह करने पर जह्नु मुनि कुछ नरम हुए और अपनी जांघ को चीर कर गंगा को बाहर निकाला। जह्नु मुनि के जंघा से निकलने के कारण गंगा का नाम जाह्नवी पड़ा। दूसरी पौराणिक कथा है कि जब गंगा का स्वर्ग लोक से पृथ्वी लोक पर अवतरण हुआ था तो उनकी गति को रोकने के लिए भगवान् शिव ने अपनी जटा खोलकर गंगा के प्रवाह मार्ग में आकर खड़े हो गए। शिवजी के इस चमत्कार को देख कर गंगा वहां से गायब हो गयी। बाद में देवताओं के निवेदन पर भगवान् शिव ने अपनी जाँघों के नीचे से गंगा को बहने का मार्ग दिया। यही कारण है कि पूरे भारत वर्ष में सिर्फ यहीं पर गंगा उत्तर दिशा में बहती है।भगवान शिव यहाँ स्वयं आपरूप से उत्पन्न हुए थे जिस कारण वे अजगवी महादेव कहलाये। कहा जाता है कि जो भी भक्त श्रावण महीने में बाबा बै।नाथ को जल चढ़ाने के लिए कांवर में गंगाजल भरने आते हैं , वे इस मन्दिर में आकर भगवान भोले की पूजा अर्चना और जलाभिषेक करना नहीं भूलते।

सुल्तानगंज से देवघर की कांवर-यात्रा मात्र एक धार्मिक यात्रा ही नहीं वरन् शिव और प्रकृति के साहचर्य की यात्रा है। कांवर-मार्ग में हरे-भरे खेत, पर्वत, पहाड़, घने जंगल, नदी, झरना, विस्तृत मैदान-सभी कुछ पड़ते हैं। रास्ते में जब बारिश की बौछारें चलती हैं तो बोल बम का उद्घोष करते हुए कांवरिया भक्तगण मानों भगवान शंकर के साथ एकाकार हो उठते हैं। देवघर में जल अर्पण करके लौटते समय न सिर्फ धार्मिक और आध्यात्मिक रूप से अपने को परिपूर्ण पाता है, वरन प्रकृति के सीधे साहचर्य में रहने के कारण वह अपने अंदर एक नयी ऊर्जा और उत्फुल्लता महसूस करता है। आज के प्रदूषण के युग में अभी भी प्रकृति के पास मनुष्य को देने के लिये बहुत कुछ है- यह संदेश श्रावणी मेला की कांवर यात्रा देता है जो इसमें शामिल होकर ही महसूस किया जा सकता है। जल शांति, स्वच्छता और जीवन का प्रतीक है- शीतलता से भरा हुआ।

भगवान शंकर पर जल का अर्पण हमें शांति और शीतलता का ही तो संदेश देता प्रतीत होता है। श्रावण में शिव यह संदेश देते हैं कि भक्ति के लिए किसी आडंबर की जरुरत नहीं, मुझपर सिर्फ गंगा जल और बेलपत्र चढ़ाओ और वरदान में मुझसे जीवन की सारी खुशियाँ ले जाओ। पवित्र जल हमें बाजार से दूर पुराण कथाओं, कहानियों, विश्वासों और श्रद्धा, संस्कृति तथा उत्सव की एक अभिभूत दुनिया में ले जाता है। भगवान शंकर, जो देवों के देव महादेव कहलाते हैं, के बारे में धार्मिक मान्यता है कि श्रावण मास में जब समस्त देवी-देवतागण विश्राम पर चले जाते हैं, वहीं भगवान भूतनाथ गौरा पार्वती के साथ पृथ्वी-लोक पर विराजमान रहकर अपने भक्तों के कष्ट-कलेश हरते हैं और उनकी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। ऐसी लोक-आस्था है कि श्रावण मास के दिनों में भगवान शंकर बैद्यनाथ धाम और अजगैबीनाथ धाम में साक्षात वि।मान रहते हैं जहाँ उनकी अर्चना द्वादश ज्योतिर्लिंग और अजगैबीनाथ महादेव के रूप में होती है। यही कारण है कि औघड़दानी शिव के पूजन हेतु लाखों भक्त सुल्तानगंज अजगैबीनाथ धाम और देवघर बै।नाथ की ओर उमड़ पड़ते हैं।

श्रावण मास में सुल्तानगंज से बैद्यनाथधाम की कांवर-यात्रा मात्र एक धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं, वरन यह हमारी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और आर्थिक मान्यताओं का भी प्रतीक है।

● नेहा कुमारी

वर्ष - 9, अंक-8, अगस्त 2018
पटना कलम
बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

संरक्षक
कृष्ण कुमार ऋषि

प्रधान संपादक
चैतन्य प्रसाद

संपादक
विनोद अनुपम

संपादकीय संपर्क
निदेशक
सांस्कृतिक कार्य निदेशालय
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार
विकास भवन, बेली रोड, पटना
email :culturebihar@gmail.com
vinod.anupam63@gmail.com

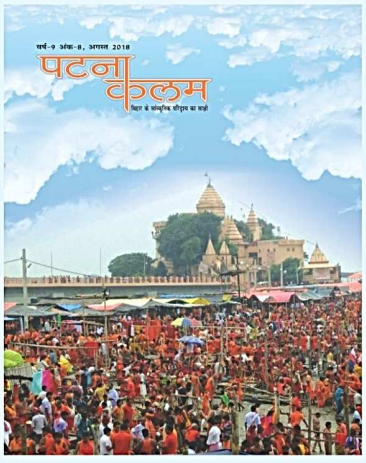

प्रधान सम्पादक की कलम से ...

लगभग 110 किलोमीटर का पहाड़ी रास्ता,कभी तपती धूप तो कभी झमाझम बारिश।कहीं नदी की तेज धार तो कहीं चुभते पत्थर। लेकिन बोलबम का उत्साह कभी कम नहीं पड़ता। सैकड़ों वर्षों से जारी पर्यटन की यह बिहारी परंपरा विश्व में अन्यत्र दुर्लभ है, जिसमें धन, धर्म, जाति, लिंग, उम्र से परे हर किसी को शामिल होने का आमंत्रण है। यह प्रतीक है धार्मिक पर्यटन के प्रति हमारी जिजीविषा का भी।

श्रावण मास में इस कांवर यात्रा को सुखद और विपदाहीन बनाने के लिए सरकार के स्तर पर इस वर्ष भी विभिन्न विभागों द्वारा पूरे रास्ते में तैयारियां की गई हैं। कला संस्कृति विभाग ने भी कांवर यात्रियों के विश्राम को सुखद बनाने के लिए कई स्थानों पर संगीत कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है, जिसमें राष्ट्रीय और राज्य स्तर के कलाकार भक्तिगीतों और भजनों की प्रस्तुति दे रहे हैं।

वास्तव में सुल्तानगंज से शुरु होने वाली यह अनथक यात्रा, मात्र धार्मिक यात्रा नहीं होती, यह यात्रा अपनी व्यक्तिगत पहचान से अलग एक सामूहिक पहचान बनाने की होती है, जहां कोई व्यक्ति, व्यक्ति नहीं रहता, सभी एकमात्र बम नाम में एकत्र हो जाते हैं। हमें विश्वास है, इसी तरह की यात्राएं हमारे बिहारी पहचान की भी प्रस्थानबिन्दु बन सकेगी। जब हमें अपने नाम से पहचाने जाने से ज्यादा गर्व बिहारी नाम से पुकारे जाने पर होने लगेगा।

जुलाई के माह का अंत हिन्दी उर्दू के महान लेखक प्रेमचंद की जन्मतिथि के साथ होता है। यह वह दिन होता है जब प्रेमचंद के बहाने हिन्दी उर्दू की सौहार्द्र पूर्ण साहित्यिक परंपरा को हम याद करते हैं। प्रेमचंद उपन्यास सम्राट माने जाते हैं, जिनके युग का विस्तार सन् 1880 से 1936 तक है। यह कालखण्ड स्वाधीनता आंदोलन में महत्वपूर्ण दौर माना जाता रहा है। प्रेमचंद की लेखनी उस दौर की जीवंत गवाह है। माना जाता है प्रेमचंद की रचनाओं को पढकर हम स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास को सहजता से समझ सकते हैं। वे लेखक होने के साथ देशभक्त नागरिक, कुशल वक्ता, जिम्मेदार संपादक और संवेदनशील रचनाकार थे। बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में जब हिन्दी, उर्दू में काम करने की तकनीकी सुविधाएँ नहीं थीं फिर भी इतना काम करने वाला लेखक उनके सिवा कोई दूसरा नहीं हुआ। सरलता, सौजन्य और उदारता की वह मूर्ति थे। उनके हृदय में गरीबों एवं पीड़ितों के लिए सहानुभूति का अथाह सागर था, जो उनकी रचनाओं का मुख्य स्वर रहा है। आश्चर्य नहीं कि काल परिस्थियों से परे प्रेमचंद की प्रासंगिकता हर दौर में कायम रही है और आज भी है। बिल्कुल साधारण दिखने वाले प्रेमचन्द अन्दर से जीवनी-शक्ति के मालिक थे। हमें गर्व है कि राज्य की सबसे सुविधासंपन्न रंगशाला प्रेमचंद के नाम पर नामित है और आज भी हमें उर्जस्वित रखती है। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी विभाग के स्तर पर प्रेमचंद जयंती वैचारिक गरिमा के साथ मनायी गई।

शुभकामनाओं के साथ

चैतन्य प्रसाद

(चैतन्य प्रसाद)
प्रधान सचिव
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार

श्रावणी मेला का उद्घाटन

श्रावणी मेला को राजकीय दर्जा मिलने के बाद राज्य सरकार ने दिल खोलकर खर्च करने की योजना तैयार की है। अजगैबी नाथ मंदिर से लेकर मुंगेर व बांका जिला क्षेत्र के कच्ची कांवरिया पथ पर कांवरियों की सुविधा के लिए 52.35 करोड़ रुपये खर्च करने की योजना तैयार की गई है। इस वर्ष सारी सुविधाएं भादो तक जारी रहेंगी।

श्रावणी मेला के उद्घाटन के अवसर पर सुल्तानगंज आए उपमुख्यमंत्री सह वित्त मंत्री सुशील कुमार मोदी ने कहा कि, श्रावणी मेला पहला मेला है जिसे राजकीय मेला का दर्ज दिया गया। 2005 में सुल्तानगंज से बाबाधाम के रास्ते में अलकतरे वाली सड़क थी। इससे कांवरियों को तकलीफ होती थी। गंगा स्नान के बाद कांवरिया नाव से अजगैबी नाथ मंदिर जाते थे। जो खतरनाक होता था। तत्कालीन एनडीए सरकार ने कच्ची कांवरिया पथ बनाया। अजगैबी नाथ मंदिर तक पुल बनवाया। उन्होंने कहा, केंद्र सरकार का पूरा सहयोग है। फंड की कमी नहीं है। डिप्टी सीएम ने प्रशासनिक अधिकारियों से कहा कि मेला अवधि तक सुल्तानगंज में एक मिनट बिजली नहीं कटे। कोई आपराधिक घटना भी नहीं हो। होटल वाले नाश्ता, भोजन आदि के लिए तय रेट से ज्यादा न वसूलें। कांवरियों को बासी भोजन न दी जाए। वे खुद पटना से इन चीजों की मॉनिटरिंग करेंगे। श्री मोदी ने कहा कि इस बार कांवरिया पथ पर कांवरियों की सुविधा पर 52.35 करोड़ खर्च होंगे। कुछ काम पूरा भी हो गया। कुछ काम बाकी है। बाकी काम को मेला अवधि के अंदर पूरा किया जाएगा। इसकी मॉनिटरिंग की जिम्मेदारी पर्यटन मंत्री प्रमोद कुमार को दी गई है। श्री मोदी ने कहा कि दो साल के अंदर बिहार में गंगा नदी में सीवरेज का एक बूंद भी पानी नहीं गिरेगा। गंगा से सटे सूबे के 12 जिलों के 23 शहरों में 254 करोड़ की लागत से सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट बनाया जाएगा। सीवरेज के शोधित पानी का उपयोग सिंचाई कार्य में किया जाएगा। उन्होंने कहा कि 7.94 करोड़ से सुल्तानगंज का विकास होगा। जिसमें अजगैबीनाथ मंदिर पर 1.47 करोड़ खर्च होंगे। कांवरिया पथ पर 1037 कांवरिया स्टैंड, 180 सोलर स्ट्रीट लाइट, 1037 बेंच बनाए गए हैं। सुल्तानगंज-अगुवानी घाट के बीच निर्माणाधीन पुल डेढ़ साल के अंदर पूरा हो जाएगा।

केंद्र सरकार के प्रतिनिधि के रूप में आए केंद्रीय स्वास्थ्य राज्यमंत्री अश्विनी चौबे ने कहा कि श्रावणी मेला को राजकीय के बाद अब राष्ट्रीय मेला का दर्जा भी मिलेगा। केंद्र सरकार ने काफी पहले ही मेला के विकास के लिए 200 करोड़ का बजट दिया था। 18 अगस्त 2015 को आरा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 600 करोड़ की घोषणा में ही यह राशि शामिल थी। इस मद से 100 करोड़ का आवंटन राज्य सरकार को मिल भी गया है।

भूमि एवं राजस्व मंत्री रामनारायण मंडल ने कहा कि राजकीय मेला के लिए 20 दिन में कागज तैयार कर कैबिनेट से दर्जा दिलाया। कांवरिया पथ पर कंकड़ युक्त मोटा बालू गिराने के मामले में इंजीनियर पर कार्रवाई का आदेश भी दिया। पर्यटन मंत्री प्रमोद कुमार ने कहा कि पर्यटक विश्राम शिविर में पर्यटन पदाधिकारी के साथ-साथ पर्यटक गाइड भी मौजूद रहेंगे। पीएचईडी मंत्री विनोद नारायण झा ने कहा कि श्रावणी मेला दुनिया का अकेला मेला है। जो एक माह तक 105 किलोमीटर लंबी दूरी तक चलता है। 2005 में एनडीए की सरकार बनने के बाद कांवरियों के लिए सुविधाएं बहाल हुई। इस बार विभाग की ओर से कांवरियों को गर्म पानी भी दी जाएगी। 9-10 जगहों पर झरना की व्यवस्था है। वाटर एटीएम सभी धर्मशाला के बाहर लगाई गई है। कांवरियों को आरओ पानी पीने को मिलेगा। 1000 चापाकल गड़ाए गए हैं। 300 स्थायी टॉयलेट हैं। कई अस्थाई टॉयलेट भी बनाए गए। महिलाओं के लिए बाथरूम की अलग से व्यवस्था है। सरस्वती पूजा से महाशिवरात्री तक भी कांवरियों का आना-जाना लगा होता है। अगले साल से सालों भर पानी-शौचालय की व्यवस्था कांवरिया पथ पर बहाल होगी। इससे पहले डीएम प्रणव कुमार ने कांवरिया पथ पर उपलब्ध होने वाली सुविधाओं की जानकारी दी। मौके पर सुल्तानगंज विधायक सुबोध राय, तारापुर विधायक मेवालाल चौधरी, एमएलसी एनके यादव, जिप अध्यक्ष टुनटुन साह के अलावा तमाम पदाधिकारी मौजूद थे।

श्रावण में केशरिया हुआ बिहार

राजकीय स्तर पर पहली बार आयोजित हुए श्रावणी मेला 2018 का आगाज अनुमंडल मुख्यालय से सटे पौराणिक बाबा धीमेश्वर नाथ महादेव मंदिर परिसर, धीमा(बनमनखी) में किया गया। अनुमंडल प्रशासन द्वारा आयोजित इस राजकीय श्रावणी मेला का उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर बिहार सरकार के कला संस्कृति व युवा मामलों के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि सहित विधायक विजय खेमका, अनुमंडल पदाधिकारी राकेश कुमार, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी विभाष कुमार, प्रखंड विकास पदाधिकारी किशोर कुणाल, नगर पंचायत के कार्यपालक पदाधिकारी प्रताप नारायण सह सहित मंदिर कमेटी के अध्यक्ष कमलेश्वरी प्रसाद सह ने संयुक्त रूप से किया है। इस मौके पर अनुमंडल पदाधिकारी राकेश कुमार ने मंत्री श्री ऋषि का स्वागत बुके देकर किया जबकि अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं ने मंत्री सहित विधायक का सम्मान अंग वस्त्र देकर किया। इस मौके पर अपने स्वागत भाषण में अनुमंडल पदाधिकारी राकेश कुमार ने बताया कि भविष्य में इस स्थल के लिए और भी संभावनाएं विकसित होगी।

इस अवसर पर मंत्री ने कहा कि मेला प्राधिकार के माध्यम से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया है तथा यह समारोह राजकीय समारोह के रूप में आयोजित होगा। उन्होंने कहा कि

धीमेश्वर धाम नगरी में अब हर साल 30 दिवसीय श्रावणी मेला राजकीय महोत्सव के रूप में मनाया जाएगा। आज हम धीमेश्वर नाथ महादेव मंदिर में विकास की नींव डाल रहे हैं। अब इस मंदिर का विकास सरकार के स्तर से किया जाएगा। उन्होंने कहा कि विकास से लोगों की आय बढ़ेगी एवं लोग खुशहाल होंगे। कार्यक्रम के माध्यम से सामाजिक विकास करना चाहते हैं। इसमें सब का सहयोग जरूरी है। इस मौके पर सदर पूर्णिया विधायक विजय खेमका ने कहा कि लंबे समय से सीमांचल का यह क्षेत्र सदा से उपेक्षित रहा है तथा इसके विकास के लिए मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने सोचने का काम करते हुए धीमेश्वर नाथ महादेव मंदिर में आयोजित होने वाले श्रावणी मेला को राजकीय समारोह घोषित करने में अहम भूमिका अदा किया है। श्री खेमका ने संबोधित करते हुए कहा कि आज मेरे दिल को सुकून मिला है कि मेरी जन्म-भूमि में इतने बड़े महोत्सव का आयोजन किया गया। उन्होंने मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि से शीतला माता मंदिर पूर्णिया को राजकीय महोत्सव का दर्जा दिलाने की मांग की। इसी बीच मंत्री ने भी अगले साल जनवरी माह में उनकी मांग को पूरा करने का आश्वासन दिया। इस मौके पर बनमनखी अनुमंडल पदाधिकारी राकेश कुमार एवं बनमनखी अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी विभास कुमार ने कहा कि बिहार सरकार के मंत्री द्वारा धीमेशवर धाम नगरी में इतने बड़े आयोजन किया गया जो आज काफी खुशी की बात है।

रामलीला कर याद किए गए प्रेमचंद

प्रेमचंद जयंती के अवसर पर बिहार संगीत नाटक अकादमी और कला, संस्कृति युवा विभाग का संयुक्त आयोजन प्रेमचंद रंगशाला में 'स्मृति प्रेमचंद' के नाम से किया गया। प्रेमचंद रंगशाला में आयोजित इस आयोजन का उद्घाटन कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने किया। उदघाटन वक्तव्य में मंत्री ने कहा प्रेमचंद ने जो ज्ञान हमें दिया उसे हमें आगे बढ़ाना है। अपनी रचनाओं के जरिये किसान-मजदूरों के दुख:दर्द को सामने तो लाये ही, भारतीय समाज की एक तस्वीर को भी सामने लाए। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद हमारे दिलों में रहते हैं। यह देश के गरीबों से उनका जुड़ाव ही था कि आज इतने वर्ष बाद भी हम उनकी लेखनी को याद करते हैं। इस अवसर पर आयोजित परिचर्चा 'साहित्य का उद्देश्य' पर दिल्ली से निकलने वाली पत्रिका 'पाखी' के संपादक प्रेम भारद्वाज ने कहा साहित्य का पहला उद्देश्य सुंदर, स्वस्थ जीवन का निर्माण करना है। प्रेमचंद के कथा साहित्य में सिर्फ किस्सा नहीं है। प्रेमचंद साहित्य के सौंदर्य बोध को बदल देते हैं। होरी है, धनिया, गोबर, हामिद जैसे सबाल्टर्न लोगों , हाशिये के लोगों को नायक बना देते हैं। 'ठाकुर का कुंआश' कहानी देखने की चीज है।

इस अवसर हिन्दी और मैथिली की वरिष्ठ कथाकार उपन्यासकार उषा किरण खान ने कहा, 'प्रेमचंद ने बेहद सुगम भाषा में कहानी लेखन किया। प्रेमचंद के वक्त जो समाज था, जो संस्थाएं थीं वो काफी बदल गया है।'

इस अवसर पर निर्माण कला मंच द्वारा श्रामलीलाश का प्रदर्शन किया गया। नाटक का निर्देशन जहांगीर खान ने किया था। नाटक 'रामलीला' कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'रामलीला' पर आधारित नाटक हैं, इसे 'कहानी का मंचन' के रुप में प्रदर्शित किया गया था। हालांकि जहांगीर ने इस शैली को अपनी कल्पनाशीलता से और भी समृद्ध करने की सफल कोशिश की। इस शैली में कहानी के मंचन में रंग - वस्तु का भी प्रयोग हो किया गया और विभिन्न तरह की पोशाकों का प्रयोग इसमें किया गया है।इस नाटक में संगीत पट्टी और बहुत सारे रंग संकेतों का भी प्रयोग किया गया है सबसे खास बात यह है कि इस शैली में चरित्र की संचालन की जवाबदेही सभी अभिनेताओं की होती हैं, जो समान गति से एक-दूसरे के बीच हस्तारित होते रहते हैं।

नाटक 'रामलीला' एक वृद्व व्यक्ति के बाल मन द्वारा समाज को समझने की कोशिश है। मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखे गये इस कहानी में एक बच्चा समाज के दोहरे उसूलों को समझ नहीं पाता है। वो रामलीला में राम का चरित्र निभा रहे व्यक्ति को वास्तविक भगवान राम समझ बैठता है। जो एक लोक कलाकार है। रामलीला के आयोजन हेतु जब चंदा कम पड़ता है तो गाँव का चौधरी नई तरकीब निकालता है और नाचने वालियों को बुलाकर नृत्य करवाता है। गाँव के लोग नर्तकियों पर खूब पैसा लुटाते हैं उन्ही लोगों में बच्चे का पिता भी होता है। नर्तकियों पर अपने पिता को पैसे लुटाते देखकर वो बच्चा स्वयं को लज्जित महसूस करता है। रामलीला के समाप्ति पर रामलीला में राम-लक्ष्मण और सीता का चरित्र निभा रहे लोक कलाकारों को चौधरी बिना पैसे दिये ही वापस कर देता है। राम जी को खाली हाथ जाते देख वो बच्चा अपने पिता के पास जाता है और पैसे मांगता है। परंतु वो पैसे देने से इंकार कर देते हैं फिर वो बच्चा अपने जेब खर्च से बचाये पैसे राम जी को देता है जिसे लेकर वो चले जाते हैं। उस नन्हे बालक का मन यह देखकर व्यथित हो जाता है कि नर्तकियों के लिए सारे लोग यहां तक की उसके पिता भी पैसे लुटाते हैं पर राम जी के नाम पर कोई पैसे नहीं देता। समाज के इस दोहरे चरित्र को बच्चा समझ नहीं पाता है। ये नाटक समाज के ढोंग और पाखण्ड की पोल भी खोलता है। जहां समाज का हर व्यक्ति दोहरा चरित्र रखता है और हर दूसरे व्यक्ति को अच्छे और नेक काम करने की नसीहत देता है। नाटक में मुख्य भूमिका निभाई थी,अंजली शर्मा, रूबी खातून, अजित कुमार,रवि कुमार,चन्दन कुमार प्रियदर्शी,राहुल कुमार, शशांक शेखर,उज्ज्वल कुमार, नंदकिशोर तेजप्रताप,अनुराग और राजदीप ने।प्रकाश परिकल्पना राजकपूर की थी,जबकि संगीत अजित कुमार का था।

बिहार के कालजयी शिल्पकार का लोकार्पण समारोह

कला संस्कृति मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने कहा कि विभिन्न विधाओं से जुड़े बिहार के कलाकारों का डॉक्यूमेंटेशन किया जा रहा है,इसके लिए अखबारों में विज्ञापन देकर सुदूर गांवों में सक्रिय कलाकारों तक पहुंचने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने कहा कि कलाकारों के जीवन-यापन और उनकी देखभाल के लिए आवश्यक व्यवस्था होनी चाहिए। इसके लिए हमलोग प्रयास कर रहे हैं। उपेंद्र महारथी शिल्प अनुसंधान संस्थान के उप निदेशक अशोक कुमार सिन्हा की लोकमित्र द्वारा प्रकाशित पुस्तक बिहार के कालजयी शिल्पकार का लोकार्पण समारोह को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि इस पुस्तक में बिहार के वैसे कलाकारों का जिक्र है, जो अपने विधा में संस्कृति और सभ्यता और कला का संरक्षण कर रहे हैं।

इस अवसर पर उद्योग मंत्री जय कुमार सिंह ने कहा कि उपेंद्र महारथी शिल्प अनुसंधान संस्थान में अभी छह माह के पाठ्यक्रम के तहत डिप्लोमा की पढ़ाई हो रही है। एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स भी जल्द आरंभ कराया जाएगा। डिप्लोमा कोर्स के लिए 40 से 50 कलाकारों का एक-एक बैच बनेगा। उन्होंने कहा कि कलाकारों की आर्थिक समृद्धि के लिए राज्य सरकार लगातार प्रयास कर रही है। बिहार की कला समृद्ध है। यहां के कलाकारों की कृतियों को देश-विदेश में ख्याति मिलती है। उन्होंने कहा कि कला का अतीत में संरक्षण नहीं हो पा रहा था, लेकिन अब सरकार सजग है। नये दौर में बिहार भी कदमताल कर रहा है। मधुबनी, मिथिला, मंजूषा कला जीवंत है।

उद्योग विभाग के प्रधान सचिव डॉ. एस सिद्धार्थ ने कहा कि कलाकारों की कृतियों का लाभकारी मूल्य दिलाने के लिए विभाग ने व्यवस्था की है। ई मार्केटिंग के जरिए कलाकारों की कृतियों को सरकार लेगी और स्टोर कर डिमांड के हिसाब से बेची जाएगी। कलाकारों पर यह किताब अच्छी है, लेकिन छूटे हुए महत्त्वपूर्ण कलाकारों पर भी लिखा जाना चाहिए। इसका अंग्रेजी में भी अनुवाद किया जाना चाहिए।

पुस्तक के लेखक अशोक कुमार सिन्हा ने कहा कि विभिन्न विधाओं के सर्वोच्च कलाकारों की जीवनी और संघर्ष कलाकृति को इस पुस्तक में समेटने की कोशिश की गई है। प्रो. उषा किरण खान ने कहा कि कोशी क्षेत्र की कला जो मक्का की डंठल और मिट्टी से बनाई जाती है, इसे भी आगे लाया जाना चाहिए।

पद्मश्री बउवा देवी मैथिली में विचार रखा और कहा- कला और कलाकारों को सम्मान मिलना चाहिए। शिल्प गुरु विजेता गोदावरी दत्त ने कहा कि यह सराहनीय प्रयास है। पटना कला एवं शिल्प महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य प्रो. श्याम शर्मा ने पुस्तक का परिचय दिया। मंजूषा गुरु मनोज कुमार पंडित ने स्वागत किया। मौके पर अवर सचिव प्रदीप कुमार, उद्योग निदेशक पंकज कुमार सिंह, निदेशक तकनीकी रवींद्र प्रसाद व लोकमित्र प्रकाशन के आलोक शर्मा सहित विभिन्न विधाओं के कलाकार मौजूद थे।

पुस्तक में इन कलाकारों की उपलब्धियां शामिल हैं-

मिथिला पेंटिंग- बउवा देवी, गोदावरी दत्त व शिवन पासवान।

टेराकोटा शिल्प - ईश्वरचंद प्रसाद, ब्रह्मदेव राम पंडित, लाला पंडित।

सिक्की कला - मुन्नी देवी, नाजदा खातून, धीरेंद्र कुमार।

मंजूषा कला - उलूपी कुमारी, मनोज कुमार पंडित।

टिकुली कला - अशोक कुमार विश्वास।

पाषाण शिल्प- फिरंगी लाल गुप्ता।

काष्ठ कला - रामचंद्र गौड़।

सुजनी शिल्प - निर्मला।

एप्लिक व कशीदाकारी - सुशीला देवी।

मुद्राओं से छलका इतिहास

बिहार में पहली बार मुद्राओं के माध्यम से इतिहास को समझने का अवसर उपलब्ध हुआ। यह अवसर बिहार संग्रहालय की ओर से आयोजित कौड़ी से क्रेडिट कार्ड (भारतीय मुद्रा की यात्रा) की प्रदर्शनी से प्राप्त हुआ। इसका उद्घाटन मुख्यमंत्री के सलाहकार अंजनी कुमार सिंह ने किया। इस मौके पर म्यूजियम के डाइरेक्टर युसूफ भी मौजूद थे।

अंजनी कुमार सिंह खुद एक-एक सिक्के के बारे में जानकारी प्राप्त कर रहे थे। उन्होंने कहा कि म्यूजियम का यह प्रयास सराहनीय है। यह पहली बार है जब कौड़ी से लेकर सिक्कों तक का इतिहास एक जगह पर दिखाया गया है। यहां देश भर से सिक्कों के संग्रहकर्ता आए हैं। यह बिहार के लिए गर्व की बात है। म्यूजियम के डाइरेक्टर युसूफ ने कहा कि पटना के लिए यह ऐतिहासिक क्षण है। हमने कैशलेस से शुरुआत की थी और आज फिर वहीं पहुंच गए हैं।

प्रदर्शनी हॉल को तीन खंडों में बांटा गया था। प्राचीन भारतीय मुद्रा, मध्यकालीन भारतीय मुद्रा और आधुनिक भारतीय मुद्रा। प्रदर्शनी में प्राचीन भारतीय मुद्रा खंड में वस्तु विनिमय,आदिम मुद्रा, आहत सिक्के, ढालित सिक्के, इंडो ग्रीक सिक्के, उत्तर गुप्तकालीन सिक्के, नगर राज्य के जनजातीय सिक्के, कुषाण सिक्के और गुप्तकालीन सिक्के देख जा सकते थे। इन सिक्कों का कालखंड छठी शती ईस्वी पूर्व से पहले से लेकर 12 वीं सदी पूर्व तक का था। मध्यकालीन भारतीय मुद्रा खंड में उत्तर भारत और दक्षिण भारत के प्रांतीय दिल्ली सल्तनत के सिक्के, मुगल सिक्के, रजवाड़ों के सिक्के, मुगलों के बाद स्वतंत्र राज्य के सिक्के, मध्यकालीन उत्तर पूर्वी राज्यों के सिक्के देख सकते हैं जबकि आधुनिक भारतीय मुद्रा खंड में ब्रिटिश भारत के सिक्के, यूरोपीय कंपनियों के सिक्के, भारत के सिक्के और करेंसी नोट देख सकते हैं इसका कालखंड 17 वीं शताब्दी से लेकर 21 वीं सदी तक है।

प्रदर्शनी में भाग लेने देश भर के सिक्का संग्रहकर्ताओं को आमंत्रित किया गया था। 65 साल के गिरीश शर्मा अपनी पत्नी इंदुबाला शर्मा के साथ यहां पहुंचे थे। उनके पास उज्जैनी, सुक्तिमति (600 ईसा पूर्व) के सिक्के हैं। वे कहते हैं कि नदियों में सिक्के डालने की पुरानी परंपरा है। वह उनलोगों से सिक्के खरीदते हैं जो नदियों से इन्हें निकालते हैं। सभी सिक्के मौर्यकाल से भी पुराने जमाने के हैं। वहीं आर्ची मारू बैंगलोर से आए हैं। उम्र 28 साल है। उनके पास कुषाण काल के सोने के सिक्के हैं। उसी दौर में भारत में पहली बार सोने के सिक्कों का प्रचलन हुआ था। उनके पास समुद्रगुप्त और कुमारगुप्त के अश्वमेध यज्ञ पूरे होने पर जारी किए गए सिक्के भी हैं। कोलकाता के रविशंकर 40 साल के हैं। उनके पास 1950 से लेकर आज तक के सिक्कों का संग्रह है।

खगौल के अनूप की कलाकृति ने सबका ध्यान अपनी ओर खींचा। देखने वाले इसकी सराहना किए बिना नहीं रह सके। उन्होंने फेथ, सेव इट और भारतीय रेल की जनरल बोगी थीम पर सिक्कों से अपनी कलाकृति बनाई थी।

भारतीय मुद्रा की यात्रा प्रदर्शनी समारोह के तहत व्याख्यान भी आयोजित किया गया। पहले दिन अपने व्याख्यान में नागपुर से आये सिक्कों के विद्वान प्रशांत कुलकर्णी ने मुद्रा से पहले और बाद की स्थिति पर अपना व्याख्यान दिया. उन्होंने बताया कि वस्तु के आदान-प्रदान में पहले वस्तु विनिमय और उसके बाद सिक्कों का चलन शुरू हुआ.

भारत में सिक्कों का इतिहास पुराना है. उन्होंने स्लाइड शो के जरिये शुंग कालीन मुद्रा के बारे में भी विस्तार से बताया. साथ ही उन्होंने मुद्रा आने से पहले व्यापार के बारे में बताया । उन्होंने मेसोपोटामिया समेत अन्य जगहों के ईयर रिंग के इस्तेमाल के बारे में बताया कि लोग उस समय वस्तु खरीदने के लिए ईयर रिंग का भी इस्तेमाल करते थे. इसके अलावा भी कई अन्य चीजें थीं, जिसके जरिये व्यापार होता था.

दूसरे दिन बिहारी मूल के दिल्ली निवासी सिक्कों के संग्राहक मित्रेश सिंह ने अपने व्याख्यान में कहा कि बिहार वह भूमि थी जिसने दुनिया को मुद्रा का महत्व बताया था। बिहार में ही सबसे पहले मगध काल में अपने शानदार काल के दौरान आहत सिक्कों का कांसेप्ट दिया था जिसमें चांदी को पिघलाकर पंच मार्क सिक्के बनाये जाते थे। सिक्कों के विद्वान अमृतेश आनंद ने भारतीय कागजी मुद्रा के सफर पर अपना व्यख्यान दिया। उन्होंने बताया कि कागजी मुद्रा आपसी विश्वास और समझ का बेहतरीन नमूना है।

इंदौर के गिरिश भामा ने कहा कि भारतीय मुद्राओं की प्राचीनता अभी भी अनंत गहराइयों में छुपी है, जिनका अनुसंधान लगातार जारी है. भारत में सिक्कों का इतिहास काफी पुराना है। सातवाहन सिक्के जो चांदी, तांबा, कांसा, सीसा मिश्रित धातुओं द्वारा निर्मित है, वो अत्यंत सुंदर है। गजलक्ष्मी सिक्के विदर्भ, उज्जैन एवं दक्षिण भारत के राजाओं द्वारा प्रचलित किये गये थे। नर्मदा घाटी सभ्यता के करूपरिका गणराज्य के सिक्के कांस्य धातु से निर्मित थे।

बारिश की बूंदों के बीच सुरों की बारिश

सगीत बिहान

सराजधानी वाटिका में माह के अंतिम रविवार को बारी बारिश के बीच शास्त्रीय संगीत की महफिल सजी। कला-संस्कृति एवं युवा विभाग और बिहार संगीत नाटक अकादमी की ओर से हुए 'संगीत विहान' कार्यक्रम के तहत राज्य के जाने-माने शास्त्रीय गायक पंडित विनोद कुमार पाठक ने राग-रागिनियों की प्रस्तुति कर लोगों का दिल जीता। मल्लिक घराने के पंडित पाठक ने राग नट भैरव में 'भोर भई पंछी जागे...' का गायन कर संगीतमय शुरुआत की। उन्होंने 'ललन वारी-वारी जाऊं...' से समां बांध दिया। सुबह के मनभावन मौसम में शास्त्रीय संगीत दिल को छू गया। इसमें उनके साथ तबले पर संगत कर रहे थे डॉ. श्याम मोहन और हारमोनियम पर थे अभिषेक पाठक। इस आयोजन की खास बात रही कि विपरीत मौसम के बावजूद दर्शकों की भीड़ रही। अकादमी की सहायक सचिव विभा सिन्हा ने गायक विनोद पाठक, तबला संगतकार डॉ. श्याम मोहन व हारमोनियम कलाकार अभिषेक पाठक का स्वागत किया। इस दौरान संगीत नाटक अकादमी की सचिव मीना कुमारी, सहायक सचिव विभा सिन्हा समेत कई सुधी श्रोता मौजूद थे।

विशेष शुक्रगुलजार

कला संस्कृति एवं युवा विभाग और भारतीय नृत्य कला मंदिर द्वारा निसमित आयोजन विशेष शुक्रगुलजार में दिल्ली से आए पंडित नरेश कुमार मल्होत्रा ने गायकी से दर्शकों को अपना मुरीद बना लिया। उन्होंने अपनी राग बंदिशों के सुरीलेपन और झूमरा ताल में विलंबित बंदिश से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम की शुरुआत में उन्होंने बड़ा ख्याल में चमन कल्याण में विलंबित झूमरा ताल

में निबद्ध गाया। इसके बाद छोटा खयाल में बंदिश गाया जिसके बोल हैं- कजरा कैसे डारू...., उनकी राग को लोगों ने काफी सराहा। दूसरी कड़ी में राग कलावती में विलंबित खयाल को रूपक ताल में पेश किया जिसके बोल हैं- अनमानी पिया यो रहत..., अंत में उन्होंने मीरा के भजन से दर्शकों का मनमोह लिया। उन्होंने इस प्रस्तुति से खूब तालियां बटोरीं। हारमोनियम पर सुधीर कुमार और तबला पर अशोक सिंह ने संगत की। कार्यक्रम का संचालन डॉ. रेखा दास ने किया। इस मौके पर आकाशवाणी, पटना के निदेशक किशोर सिन्हा, विधान परिषद के सदस्य डॉ. रामवचन राय और विहार म्यूजियम के निदेशक यूसुफ मौजूद थे।

शुक्र गुलजार

कला संस्कृति एवं युवा विभाग व भारतीय नृत्य कला मंदिर के तत्वावधान में 'शुक्रगुलजार' कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम की शाम शास्त्रीय कार्यक्रम के नाम रहा। कार्यक्रम में गया घराने के गायक मनीष कुमार पाठक, आरा के कथक नृत्य कलाकार राजा, अनीष आदि ने अपनी प्रस्तुति से लोगों का मनोरंजन किया। गया घराना के शास्त्रीय एवं सुगम संगीत गायक मनीष कुमार पाठक ने शास्त्रीय गायन में तीन ताल पर आधारित राग मेघ मल्हार सुनाया।

उपशास्त्रीय गायन में उनकी अगली प्रस्तुति ठुमरी की रही। राग देस में जत ताल में गायन की प्रस्तुति देकर उन्होंने श्रोताओं का दिल जीत लिया। तबला पर उनका साथ रौशन कुमार पाठक दे रहे थे। सुगम संगीत में उन्होंने वंदना किनी की लिखी गजल 'वक्त का हर सितम...' और 'लुटे हैं रंजिश में...' सुनाया। मेहंदी हसन की गजल 'तूने ये फूल जुल्फों में जो रखा है...'और चंदन दास की गजल 'जब भी कोई फैसला कीजिए... दिल से दिल का फैसला कीजिए....' सुनाकर महफिल में समां बांध दिया।

अपनी प्रस्तुति में उन्होंने मौसम का भी ख्याल रखा और बरसाती गायन में ताल दादरा सुनाया। 'कईसे जइबे सावन में कजरिया... बदरिया घिरी आई सखियां...' सुनाकर उन्होंने लोगों को गांव की गलियां याद दिला दीं।

अगली प्रस्तुति राजा कुमार और अनिष कुमार की थी। उन्होंने कार्यक्रम की शुरुआत 'बाजत डमरू शिव शंभू कर...' से की। इस वंदना में उन्होंने शिव के तांडव और पार्वती के नृत्य का वर्णन किया। इसके बाद दोनों कलाकारों ने ताल घमार में पारंपरिक और शुद्ध कथक को उपज, थाट, उठा, सादा. आमद, परन जोड़ी आमद, चक्करदार टुकड़े, चक्करदार परन, सम से सम और अनागत की तिहाई की प्रस्तुति दी। द्रुत तीन ताल में घुंघरू और तबले की युगलबंदी की प्रस्तुति पर लोग वाह-वाह कर उठे। कार्यक्रम का समापन कालिया दमन से किया गया। यमुना तट पर नाग नथइया ... नाचत गिरधर ता-ता थइया... पर कथक नृत्य ने कला का अद्भुत रंग बिखेरा। इस गीत पर संगत गौरव विशाल सिंह ने दिया। तबले पर गुरु बक्सी विकास और बांसुरी पर समीर कुमार साथ दे रहे थे।

बारिश में भी व्यस्त रहा रंगमंच

बारिश में रिहर्शल

जुलाई के महीने में मॉनसून ने दस्तक दी, और ऐसी बारिश की पटना के लोगों का घर से बाहर निकलना मुश्किल हो गया। फिर भी जब लोगों का ऑफिस जाना, खाना और नहाना जारी रहा तो रंगकर्मी नाटक करना कैसे छोड़ सकते हैं। जीवनशैली अस्त-व्यस्त होने के बावजूद नाटक के रिहर्सल में तो पहुँचना ही है। अमूमन हर दल के कलाकारों का यही हाल रहा। प्रेमचन्द रंगशाला,पटना तो रंगकर्मियों का तीर्थ है। यहाँ हमेशा कोई-न-कोई दल अपने नाटक का रिहर्सल करता ही रहता है। खास हैं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से प्रशिक्षित पुंज प्रकाश के दल के कलाकार, जो बारिश के पानी और मिट्टी से लथपथ होकर मौसम को ठेंगा दिखाते हुए अपना रिहर्सल करते रहे। ये तो थी तैयारी का आलम जब नाटक होंगे तो नाट्य प्रेमी दर्शक कहाँ रुकनेवाला थे, वो भी किसी तरह प्रेक्षागृह में पहुँच ही जाते। आइए जुलाई महीने में पटना समेत बिहार के विभिन्न जिलों में मंचित हुए नाटकों पर नजर डालतें हैं।

शुरुआत कालिदास रंगालय में पहली जुलाई को मिथिला कला संस्कृति विकास यात्रा, पटना ने मैथिली नाटक 'कने एम्हरो' का मंचन पंकज झा के निर्देशन में किया, 4 को सुर प्रभा फाउंडेशन, पटना ने सतीश प्रसाद सिन्हा लिखित शैलेश जमैयार निर्देशित 'अपने पराय', 5 को बिहार आर्ट थियेटर, पटना ने मन्नू भंडारी लिखित रणविजय सिंह निर्देशित 'महाभोज', 7 को बोधिसत्व सोसाइटी, गया ने मुक्ताकाशमंच, गाँधी मैदान, पटना में विजय तेंदुलकर लिखित कृष्ण कुमार निर्देशित 'सखाराम बाइंडर', 8 को इमैजिनेशन, पटना ने कालिदास रंगालय में गिरीश कर्नाड लिखित कुंदन कुमार निर्देशित 'हयवदन' का मंचन किया गया।

9 को सुरांगन, पटना ने राजू मिश्रा लिखित विश्वबंधु निर्देशित 'बारहमासा', 11 को आपसदारी कला मंच, मनेर ने भिखारी ठाकुर लिखित रामनाथ राम निर्देशित 'बेटी वियोग', अरुणोदय,पटना ने दो दिवसीय नाट्य समारोह में 12 को निशा कुमारी निर्देशित 'अगले जनम मोहे बिटिया न कि जो' एवं 13 को अजय शुक्ला लिखित गुड़िया कुमारी निर्देशित 'ताजमहल का टेंडर', 15 को विश्वा, पटना ने मधुकर सिंह लिखित राजेश निर्देशित 'भिखारी ठाकुर', 16 को डिवाइन सोशल डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन, पटना ने विभारानी लिखित स्वरम उपाध्याय निर्देशित 'आओ तनिक प्रेम करें' ने राजधानी में रंगमंच की सक्रियता बनाए रखी।

21को विस्तार, पटना ने दया प्रकाश सिन्हा लिखित उज्ज्वला गांगुली निर्देशित 'साँझ-सवेरा', 22 को रंग रूप, वैशाली ने सुशील कुमार सिंह लिखित अंजारुल हक निर्देशित 'कनुआ नाई' का मंचन गाँधी मैदान, पटना में हुआ। 24 को कालिदास रंगालय में इंडिपेंडेंट थियेटर द्वारा आयोजित तीन दिवसीय नाट्योत्सव 'थिएटरॉन' के पहले दिन अल्बेयर कामू लिखित राजीव रंजन निर्देशित 'कैलीगुला', दूसरे दिन मोहन राकेश लिखित मदन मोहन निर्देशित 'तमासविनी', तीसरे दिन राजीव रंजन निर्देशित 'गहरे ढाबी' का मंचन हुआ।

कालिदास रंगालय पटना में 27 को सामयिक परिवेश और कला जागरण,पटना द्वारा प्रेमनाथ खन्ना की स्मृति में आयोजित 'आदि शक्ति नाट्य महोत्सव' के अवसर पर वरिष्ठ कवि सत्यनारायण को प्रेमनाथ खन्ना साहित्य शिरोमणि सम्मान-2018 से नवाजा गया वहीं ममता मेहरोत्रा की पुस्तक टाइम मैनेजमेंट 'जिंदगी की तलाश' और पत्रिका 'सामयिक परिवेश' के नए अंक का विमोचन हुआ। सरगम आर्ट्स, पटना द्वारा अर्चना सोनी लिखित एवं निर्देशित 'उसके जाने के बाद' एवं रंग गुरुकुल, पटना द्वारा ममता मेहरोत्रा लिखित नाटक 'सीमा पार' का मंचन किया गया, 28 को कला जागरण, पटना ने ममता मेहरोत्रा लिखित अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा द्वारा नाट्य रूपांतरित सुमन कुमार निर्देशित 'मकान', 29 को सबुझ सांस्कृतिक,केंद्र कोलकाता द्वारा राजेश देबनाथ लिखित एवं निर्देशित नाटक 'वेटिंग फार यू' के मंचन से नाट्योत्सव का समापन हुआ।

30 को माध्यम फाउंडेशन, पटना ने कृष्ण चंदर की कहानी 'एक वायलिन समंदर के किनारे' का मंचन राकेश कुमार के निर्देशन में किया इसका नाट्य रूपांतरण ब्रम्हानंद पाण्डेय ने किया, 31 को कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द जयंती के अवसर पर राज्य भर में उनकी कहानियों का मंचन होता रहा। कालिदास रंगालय, में बिहार आर्ट थियेटर ने प्रेमचन्द लिखित 'सवा सेर गेहूँ' का मंचन बीरेंद्र कुमार के निर्देशन में किया। लोहिया कॉलेज, मुजफ्फरपुर में स्लेट संस्कृति, मुजफ्फरपुर ने 'एक शाम मुंशी प्रेमचंद के नाम' कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रेमचन्द लिखित सुधांशु सिंह निर्देशित 'ठाकुर का कुँआ' एवं 'ईदगाह' का मंचन हुआ।

● राजन कुमार सिंह

प्रेमनाथ खन्ना साहित्य शिरोमणी सम्मान

प्रो.चंद्रकांत लाल दास

प्रो. सी एल दास, दास बाबु, दास जी.... एक ऐसी शख्सियत जिनके सामने मैं इकबाल अहमद से उस्ताद इकबाल अहमद खान बना। उनसे मेरी पहली भेंट 1972 में पटना में हुए बिहार संगीत परिषद के एक प्रोग्राम में हुई। दास साहब ने अपने मित्र कलाकार और कुछ कलाप्रेमी मित्रों के साथ मिलकर बिहार संगीत परिषद नाम की एक संस्था बनाई थी। इसके आयोजन में मैं भी आमंत्रित था। पटना गया तो देखा शहर के रवीन्द्र भवन में आयोजित था यह प्रोग्राम और इसमें सितार वादक पंडित देबू चौधरी (दिल्ली), उस्ताद लतीफ अहमद खान (तबला वादक, दिल्ली), पंडित मनोज शंकर (सितार वादक, कोलकाता) उस्ताद नसीर अहमद खान साहब (ख्याल गायक, दिल्ली), मशकूर अहमद खान (ख्याल गायक, कोलकाता) इत्यादि कई कलाकार मौजूद थे।

उस वक्त मेरी उम्र बहुत कम थी। बल्कि पूरे आयोजन में मेरी उम्र का कोई कलाकार नहीं था। मुझे अच्छी तरह याद है मैंने राग रागेश्री गाया था। वे एक विद्वान सरोद वादक थे और उतने ही बड़े संगीत विचारक भी। हालाँकि उनका क्षेत्र तंत्र वाद्य था, लेकिन ख्याल गायकी की जो बारीकी वो समझते थे, वह कई गायकों में भी नहीं होती। देश के जितने भी नए- पुराने कलाकार थे, सभी को उन्होंने सुना था और उनकी खासियत और खामियों पर गहरी सोच भी थी उनकी। इसीलिए तो लोग उन्हें संगीत और संगीतकारों, रागों- तालों का एन्सैक्लोपीडीया मानते थे।

उन्होंने मेरे दादा गुरु, उस्ताद चाँद खान साहब को पहले ही बहुत सुना था और मेरे चाचा, उस्ताद नसीर अहमद खान साहब के तो बहुत ही करीबी थे। प्रोग्राम में मेरा गाना खत्म हुआ तो वो इतने खुश हो गये, कहने लगे, 'मैंने चाँद खान साहब और नसीर अहमद खान, दोनों को सुना है लेकिन आपने दोनों की खूबसूरती समेट ली है अपनी गायकी में।' मैं भौंचक! बिहार के इस शहर में यह कौन ऐसा शख्स है जो हमारे खानदान के सभी बड़े-बड़े उस्तादों से इस कदर परिचित है और उनकी गायकी का ऐसा कद्रदान। दिल भर आया। हम बहुत देर बातें करते रहे थे।

उस वक्त पटना में दशहरा या दिवाली पूजा का बहुत ही कार्यक्रम हुआ करता था। बल्कि पूरे देश के कलाकारों के साल भर का अन्न-गुजारा पटना के कार्यक्रम से ही होता था। हम भी हर वर्ष पटना आते रहे।

एक विद्वान कलाकार होने के साथ ही कुछ और बातें भी थीं उनमें जो उन्हें दूसरे कलाकारों- कला प्रेमियों से अलग करती थी। मेरी समझ से, वो एक रेयर फादर थे। मैंने देखा कि शहर के हर प्रोग्राम में वो अपने बच्चों को, बेटियों को लेकर आते थे प्रोग्राम सुनाने बड़े-बड़े उस्तादों का। इस शहर में वैसे तो कई कलाकार, कला प्रेमी मेरे परिचित रहे, लेकिन किसी प्रोग्राम में किसी को भी उनके बच्चों के साथ नहीं देखा। यह एक नई बात थी खास तौर पर बिहार के लिए। बेटियों के लिए ऐसी खुली सोच, किसी और में नहीं देखा मैंने।

यहाँ एक बात कहना चाहूँगा। हमारे शास्त्रीय संगीत में एक कहावत है, 'सीख्या, देख्या, परिख्या'। यानि संगीत सीखने-समझने और ग्रहण करने के लिए बड़े उस्तादों को देखना-सुनना बहुत जरूरी है। संगीत की समझ तभी ही बनती है।

संगीत के इस बीजमंत्र को दास साहब ने जितनी गहराई से अपनाया था, शायद ही कोई दूसरा कर पाए।

वे खुद विद्वान कलाकार थे और कलाकरों कि संगति से कला कैसी निखरती है,यह बात अच्छी तरह समझते थे। लोगों को यह जानकार ताज्जुब होगा कि देश के कई नामी-गिरामी कलाकार जब पटना आते, तो अक्सर इनके घर ही ठहर जाया करते थे। यहाँ संगीत की बैठकियां तो होती ही रहती थीं। मैंने खुद कई बार यहाँ गाया है। आप देख ही रहे हैं कि संगीत प्रेमी तो कई रहे, लेकिन घर में संगीत आयोजन कम ही लोग कर पाए।

दास जी के उस्ताद बहादुर खान, जो पद्मविभूषण उस्ताद अलाउद्दीन खान साहब के भतीजे थे, वो तो हमेशा दास जी के घर ही ठहरते थे। उनसे मेरी भेंट दास जी के घर पर ही हो जाया करती थी। एक बार की बात है, पूजा के दिनों में दास जी उस्ताद बहादुर खान साहब को लेने एअरपोर्ट जा रहे थे। मैं उस वक्त पटना में ही था। सो मैं भी दास जी के साथ हो लिया। हम बहादुर खान साहब को लेकर दास जी के राजेंद्र नगर वाले फ्लैट पर आये। संगीत की चर्चा शुर हुई तो काफी रात हो गई और हम वहीं रुक गए। हमने साथ-साथ खाना खाया था और बड़ी रात तक बातें करते रहे थे।

एक फॅमिली मेंबर की तरह था मैं। जब भी पटना आता उनसे अवश्य मिलता। संगीत पर उनसे बहुत लंबी चर्चाएं हुआ करती थीं। एक गुणी व्यक्ति थे वो। अंग्रेजी साहित्य के प्रोफेसर तो थे ही, एक उस्ताद परफोरमर भी रहे।

उस्ताद इकबाल अहमद खान।
खलीफा, दिल्ली घराना (ख्याल गायन)।

गोपाल सिंह नेपाली
जन्म-11 अगस्त 1911,
मृत्यु- 17 अप्रैल 1963

नवीन कल्पना करो

गोपाल सिंह नेपाली

निज राष्ट्र के शरीर के सिंगार के लिए
तुम कल्पना करो, नवीन कल्पना करो,
तुम कल्पना करो।

अब देश है स्वतंत्र, मेदिनी स्वतंत्र है
मधुमास है स्वतंत्र, चाँदनी स्वतंत्र है
हर दीप है स्वतंत्र, रोशनी स्वतंत्र है
अब शक्ति की ज्वलंत दामिनी स्वतंत्र है

लेकर अनंत शक्तियाँ सद्य समृद्धि की-
तुम कामना करो, किशोर कामना करो,
तुम कल्पना करो।

तन की स्वतंत्रता चरित्र का निखार है
मन की स्वतंत्रता विचार की बहार है
घर की स्वतंत्रता समाज का सिंगार है
पर देश की स्वतंत्रता अमर पुकार है

टूटे कभी न तार यह अमर पुकार का-
तुम साधना करो, अनंत साधना करो,
तुम कल्पना करो।

हम थे अभी-अभी गुलाम, यह न भूलना
करना पड़ा हमें सलाम, यह न भूलना
रोते फिरे उमर तमाम, यह न भूलना
था फूट का मिला इनाम, वह न भूलना

बीती गुलामियाँ, न लौट आएँ फिर कभी
तुम भावना करो, स्वतंत्र भावना करो
तुम कल्पना करो।

मुद्रक : लेज़र प्रिंटर्स, काजीपुर, पटना - 4, फोन - 9334116085
laserpatna@gmail.com